जल्द बहुत जल्द

सात समन्दर पार से

फारिदेह खल्अतबरी
कलाः अली नामवर

एकलव्य

फारिदेह खल्अतबरी
कलाः अली नामवर

एकलव्य

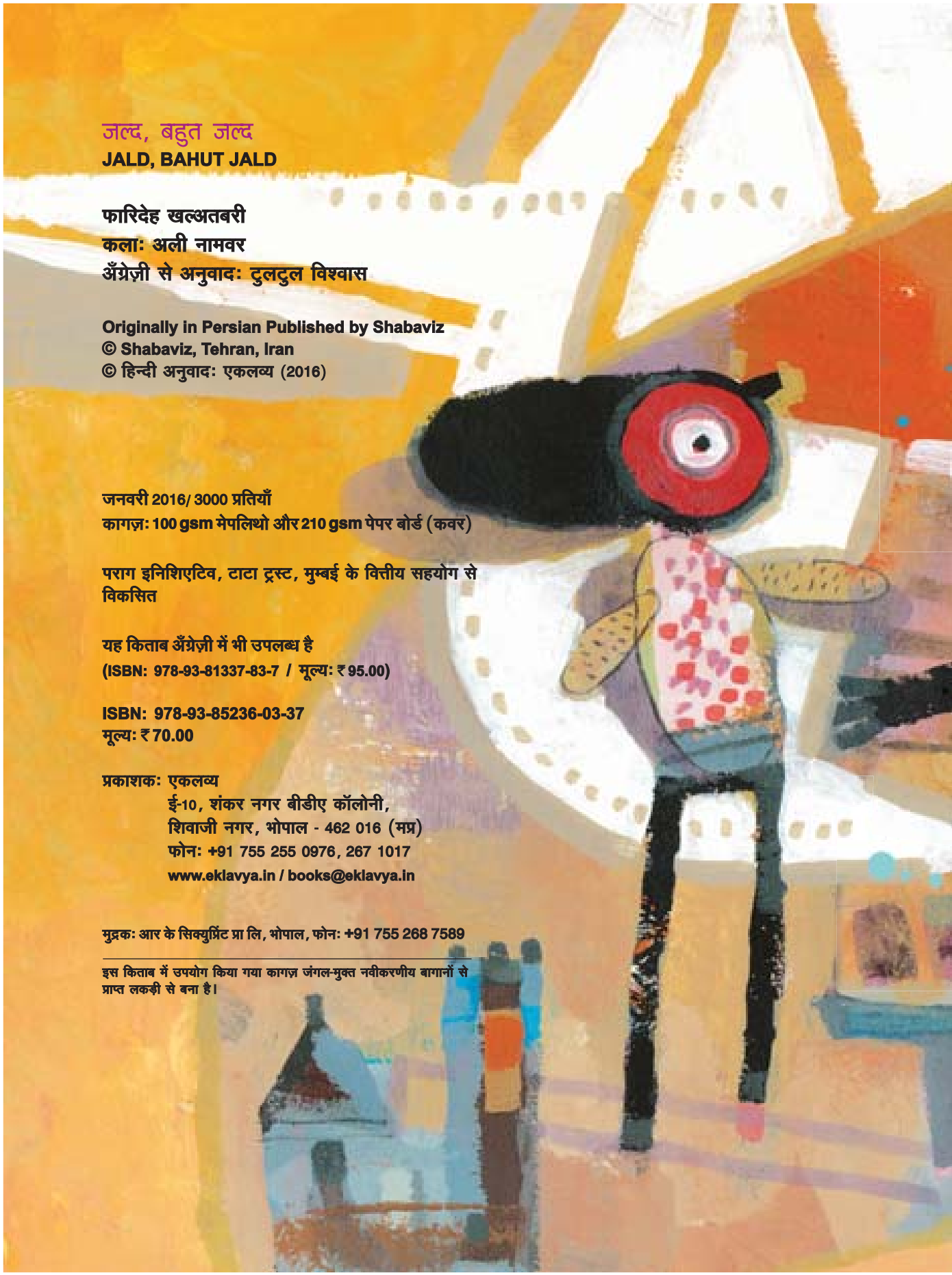

जल्द, बहुत जल्द
JALD, BAHUT JALD

फारिदेह खल्अतबरी
कलाः अली नामवर
अँग्रेज़ी से अनुवादः टुलटुल विश्वास

Originally in Persian Published by Shabaviz
© Shabaviz, Tehran, Iran
© हिन्दी अनुवादः एकलव्य (2016)

जनवरी 2016/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है
(ISBN: 978-93-81337-83-7 / मूल्यः ₹ 95.00)

ISBN: 978-93-85236-03-37
मूल्यः ₹ 70.00

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ जंगल-मुक्त नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

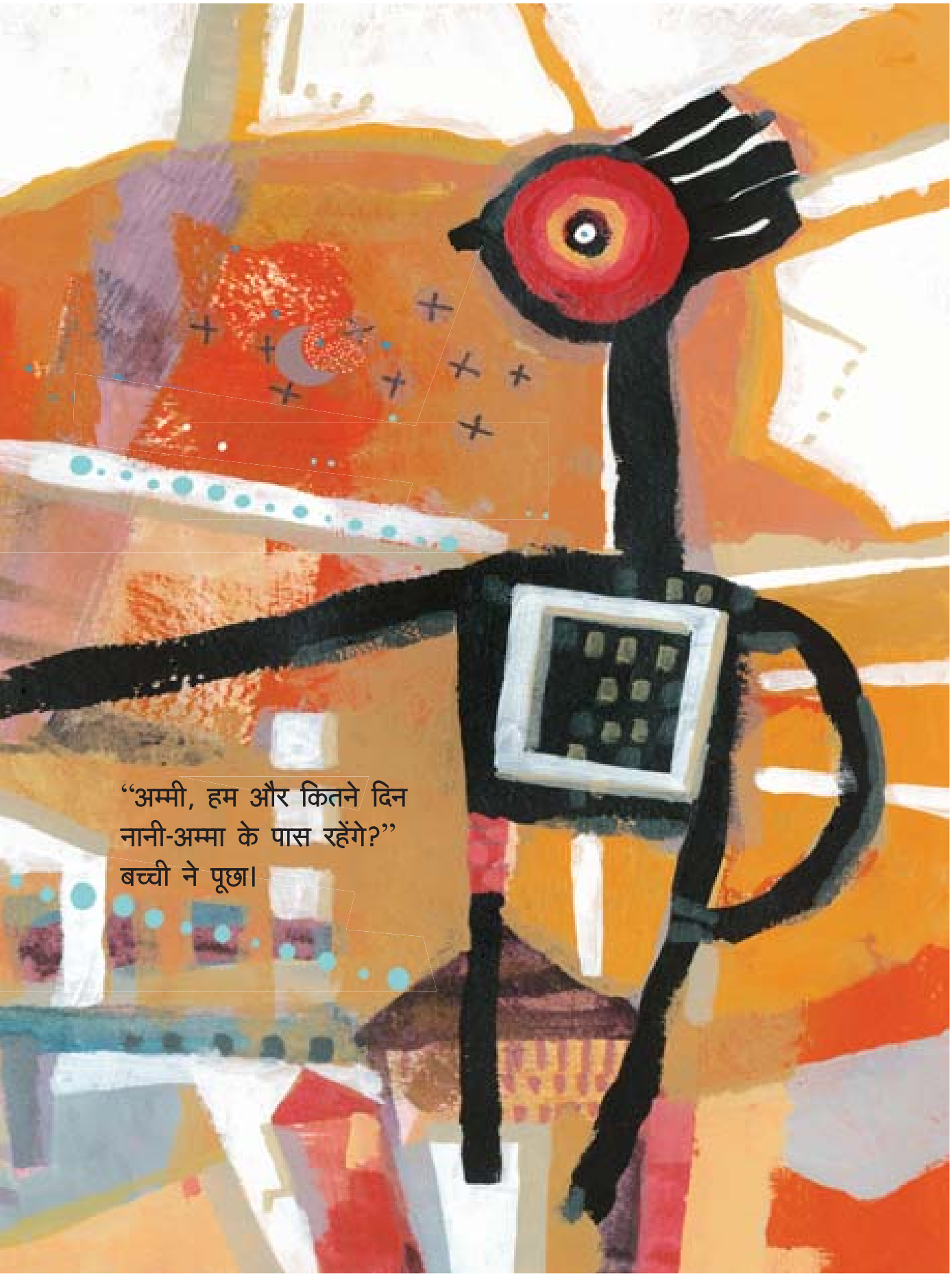

“अम्मी, हम और कितने दिन
नानी-अम्मा के पास रहेंगे?”
बच्ची ने पूछा।

“जब तक अब्बू नहीं आ जाते।” अम्मी ने कहा।
“अब्बू कब आएँगे?” बच्ची ने पूछा।

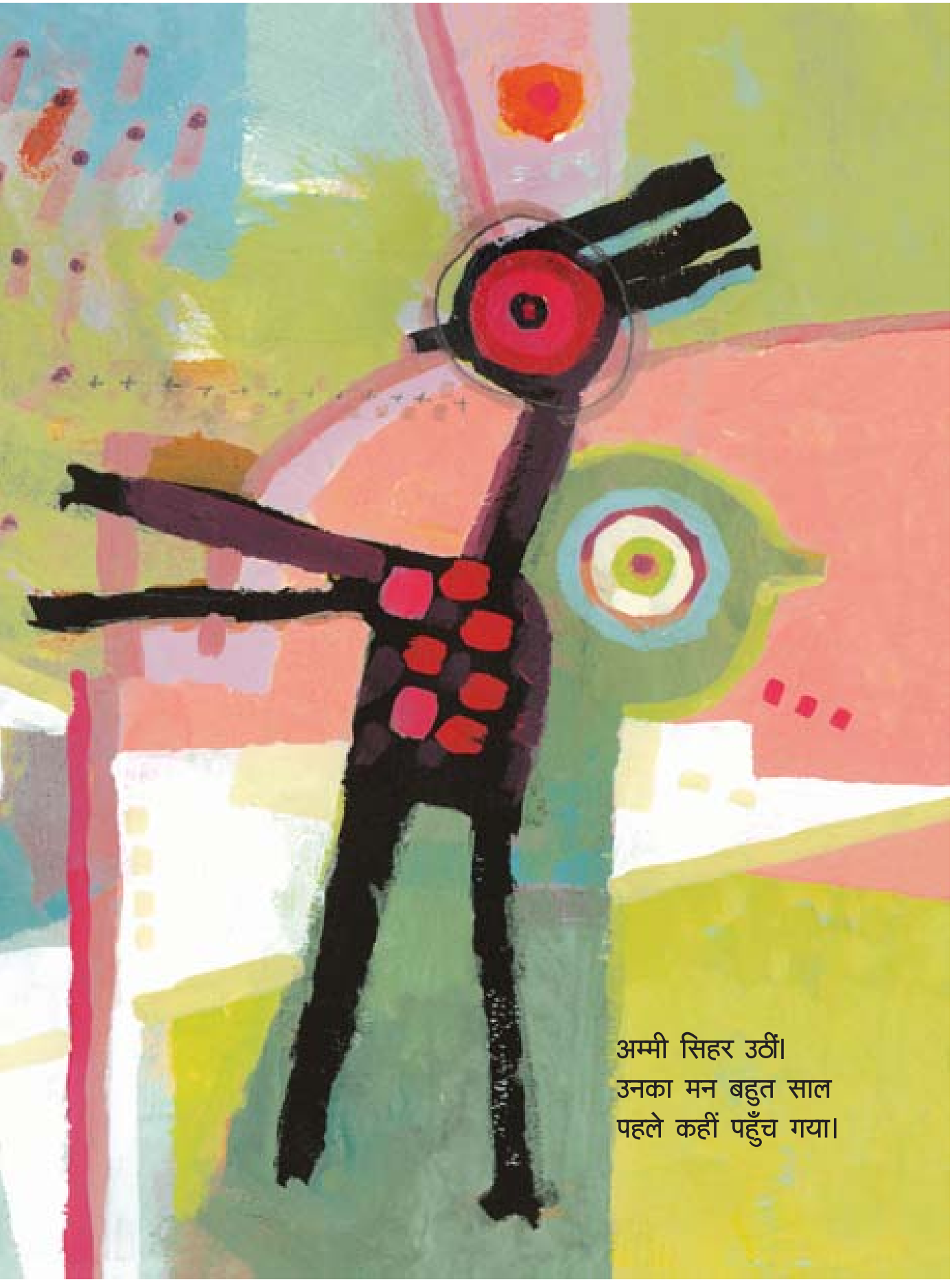

अम्मी सिहर उठीं।
उनका मन बहुत साल
पहले कहीं पहुँच गया।

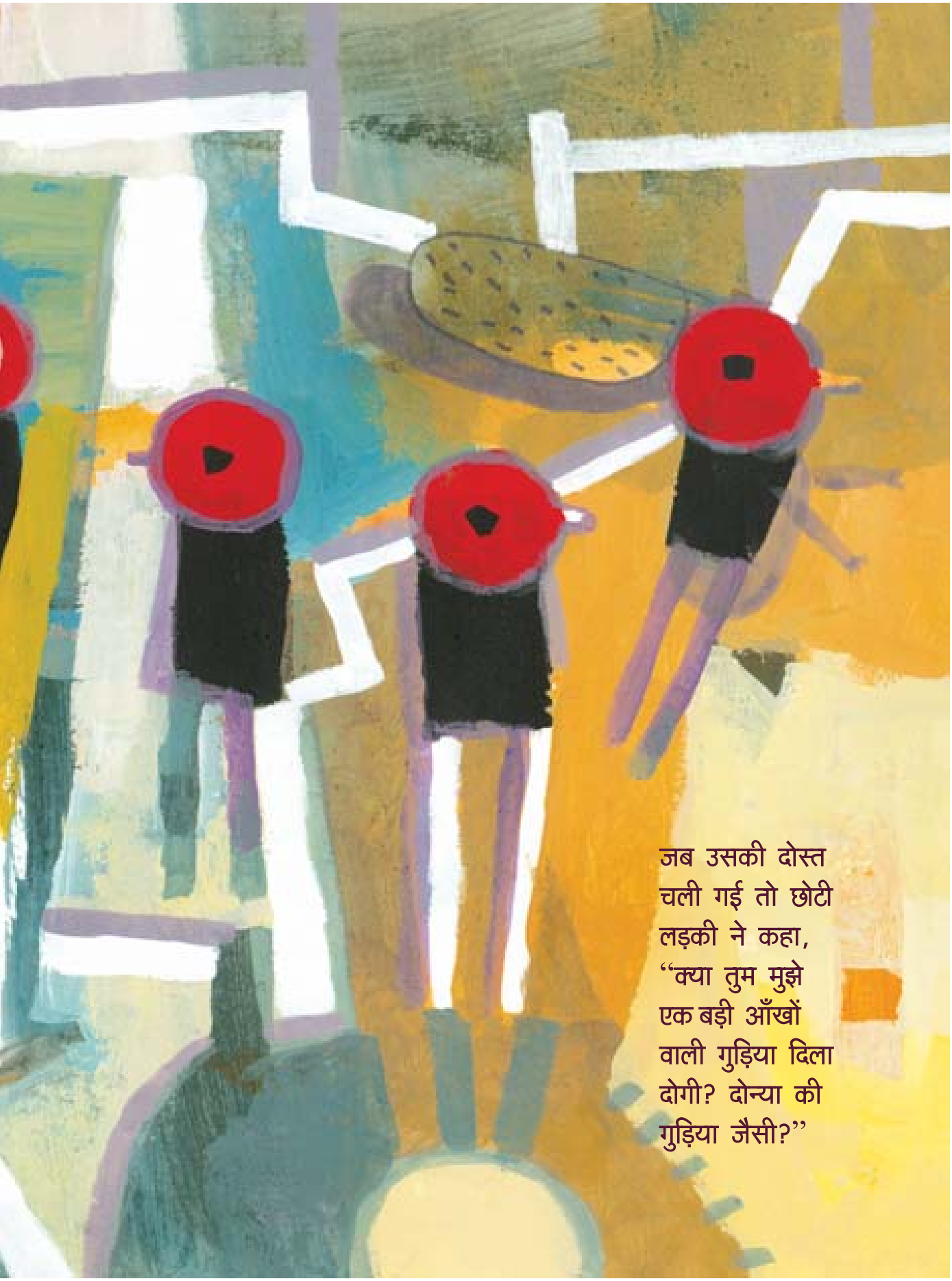

जब उसकी दोस्त चली गई तो छोटी लड़की ने कहा, “क्या तुम मुझे एक बड़ी आँखों वाली गुड़िया दिला दोगी? दोन्या की गुड़िया जैसी?”

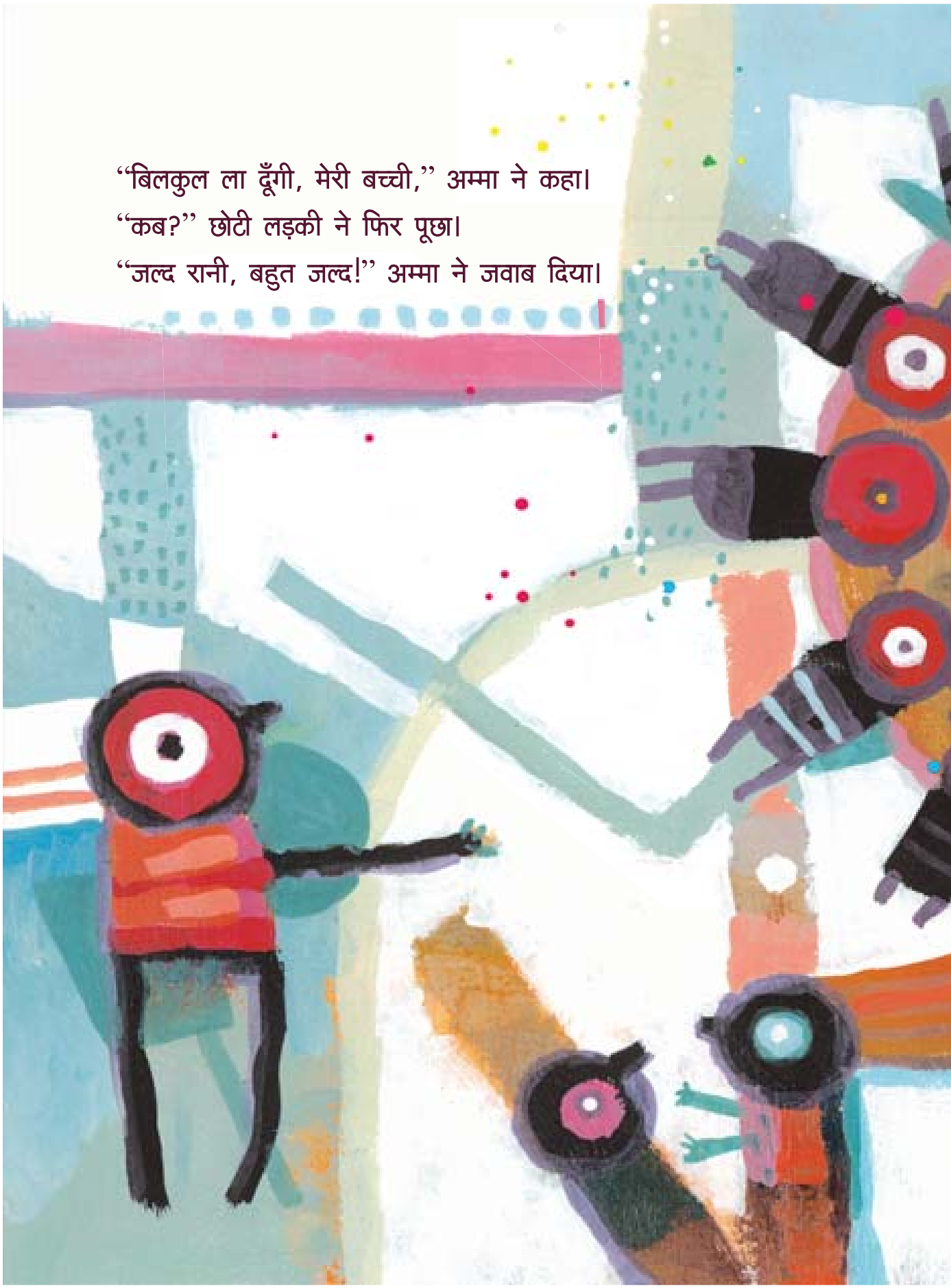

“बिलकुल ला दूँगी, मेरी बच्ची,” अम्मा ने कहा।

“कब?” छोटी लड़की ने फिर पूछा।

“जल्द रानी, बहुत जल्द!” अम्मा ने जवाब दिया।

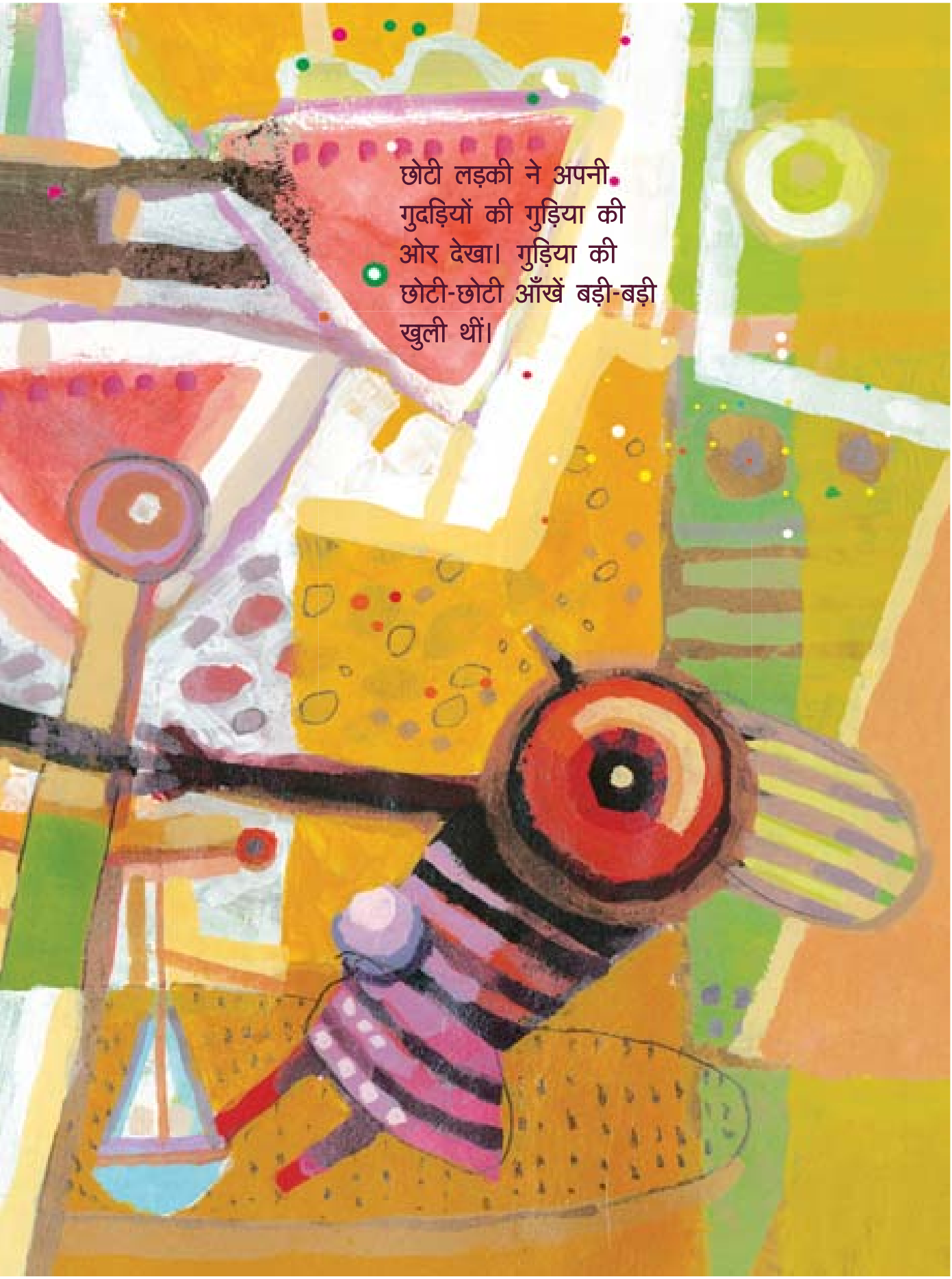

छोटी लड़की ने अपनी गुदड़ियों की गुड़िया की ओर देखा। गुड़िया की छोटी-छोटी आँखें बड़ी-बड़ी खुली थीं।

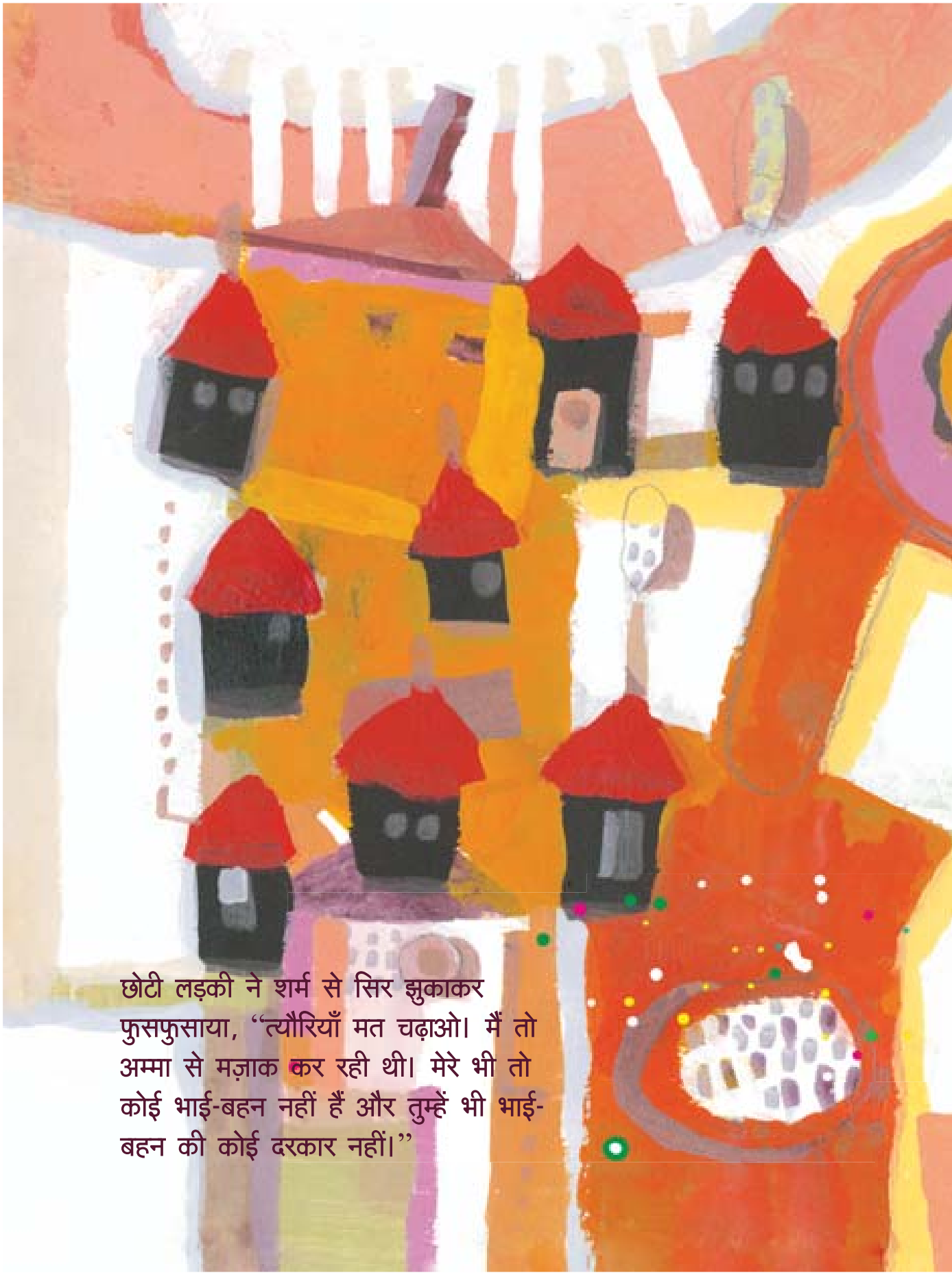

छोटी लड़की ने शर्म से सिर झुकाकर फुसफुसाया, "त्यौरियाँ मत चढ़ाओ। मैं तो अम्मा से मज़ाक कर रही थी। मेरे भी तो कोई भाई-बहन नहीं हैं और तुम्हें भी भाई-बहन की कोई दरकार नहीं।"

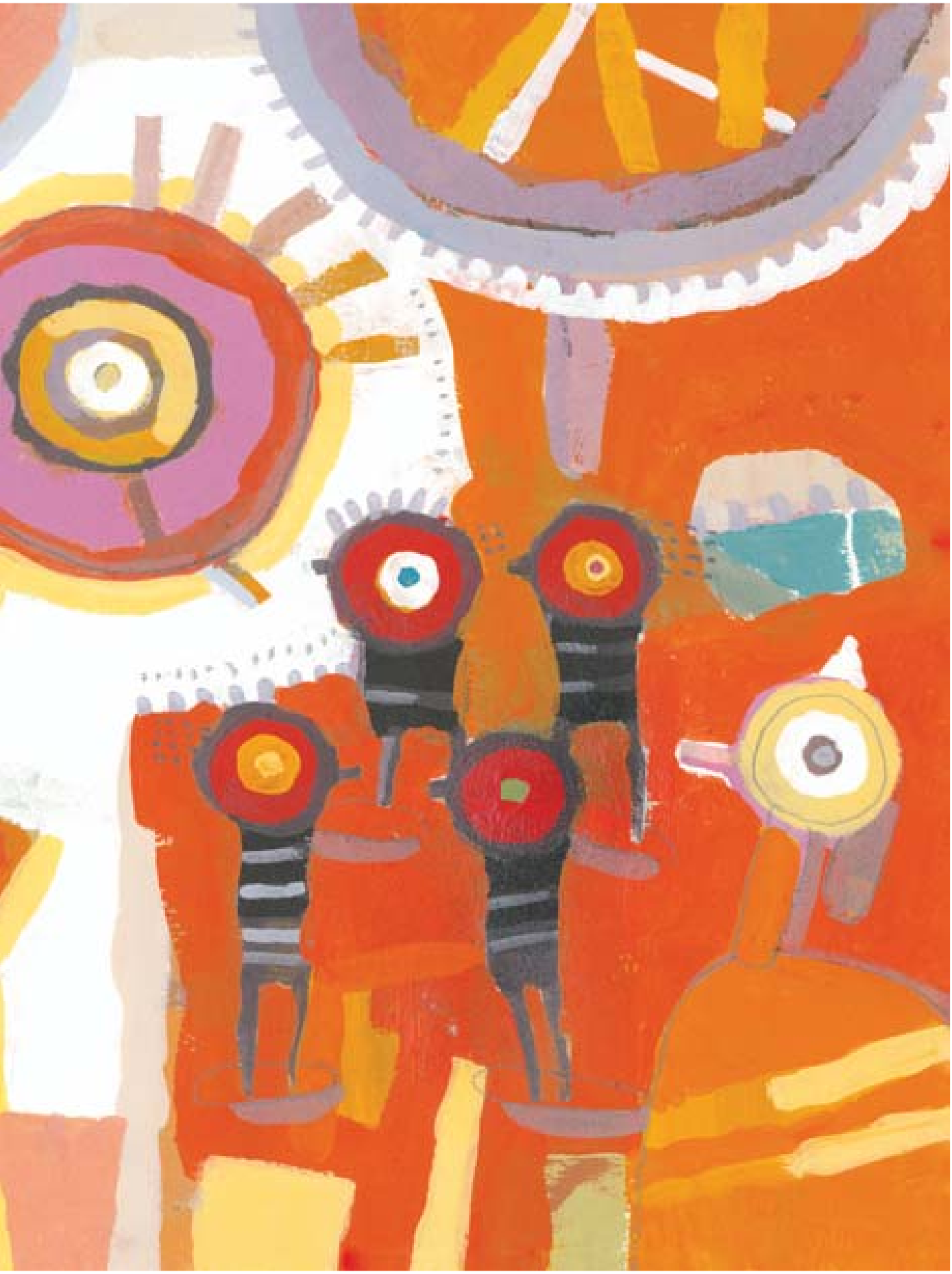

गुड़िया चुप थी पर वह
मुस्करा नहीं रही थी।

“अम्मी, मैंने आप से पूछा
कि अब्बू कब आएँगे?”
बच्ची की आवाज़ सुनकर
अम्मी अतीत से लौट आईं।

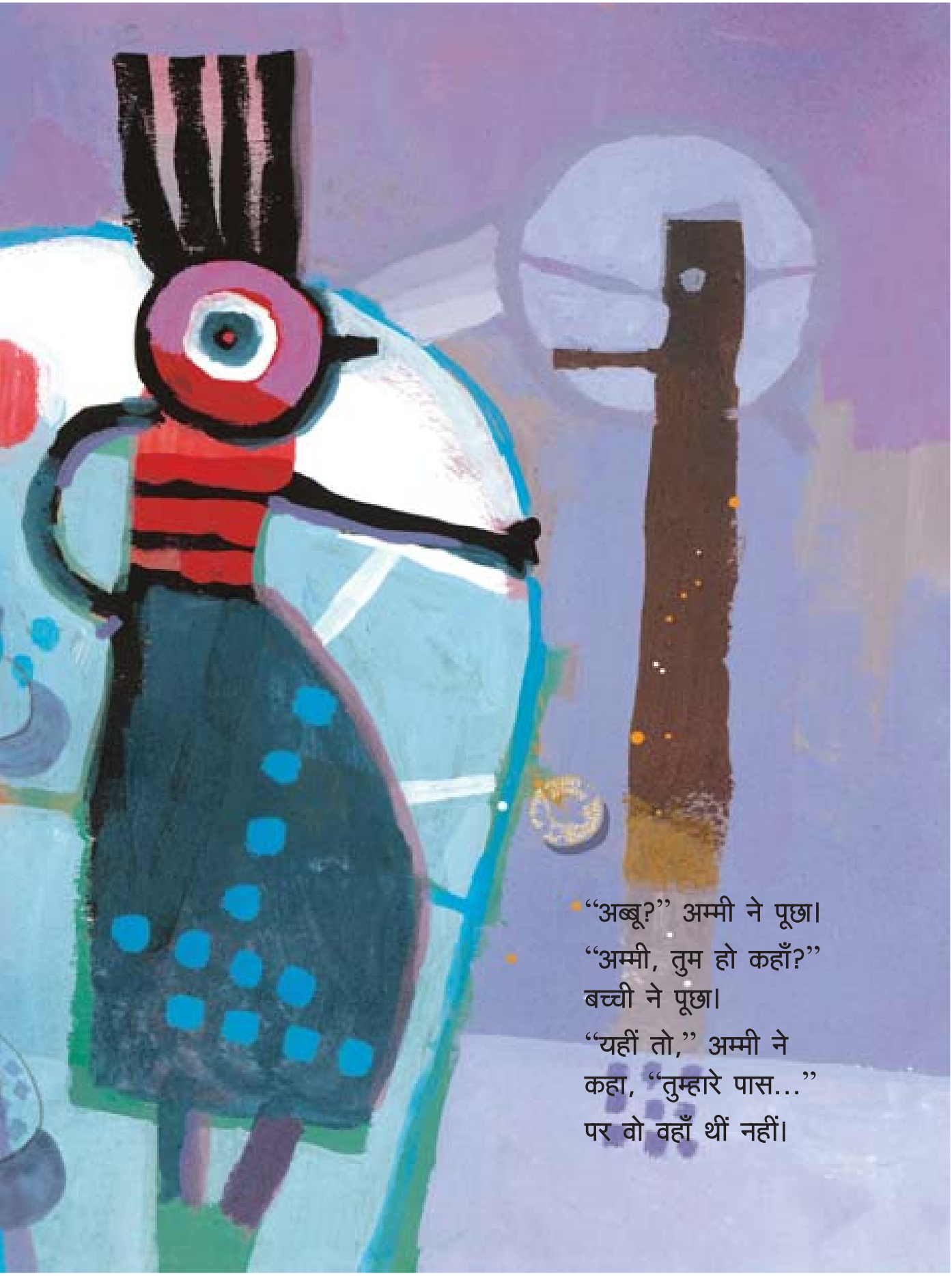

“अब्बू?” अम्मी ने पूछा।
“अम्मी, तुम हो कहाँ?”
बच्ची ने पूछा।
“यहीं तो,” अम्मी ने
कहा, “तुम्हारे पास...”
पर वो वहाँ थीं नहीं।

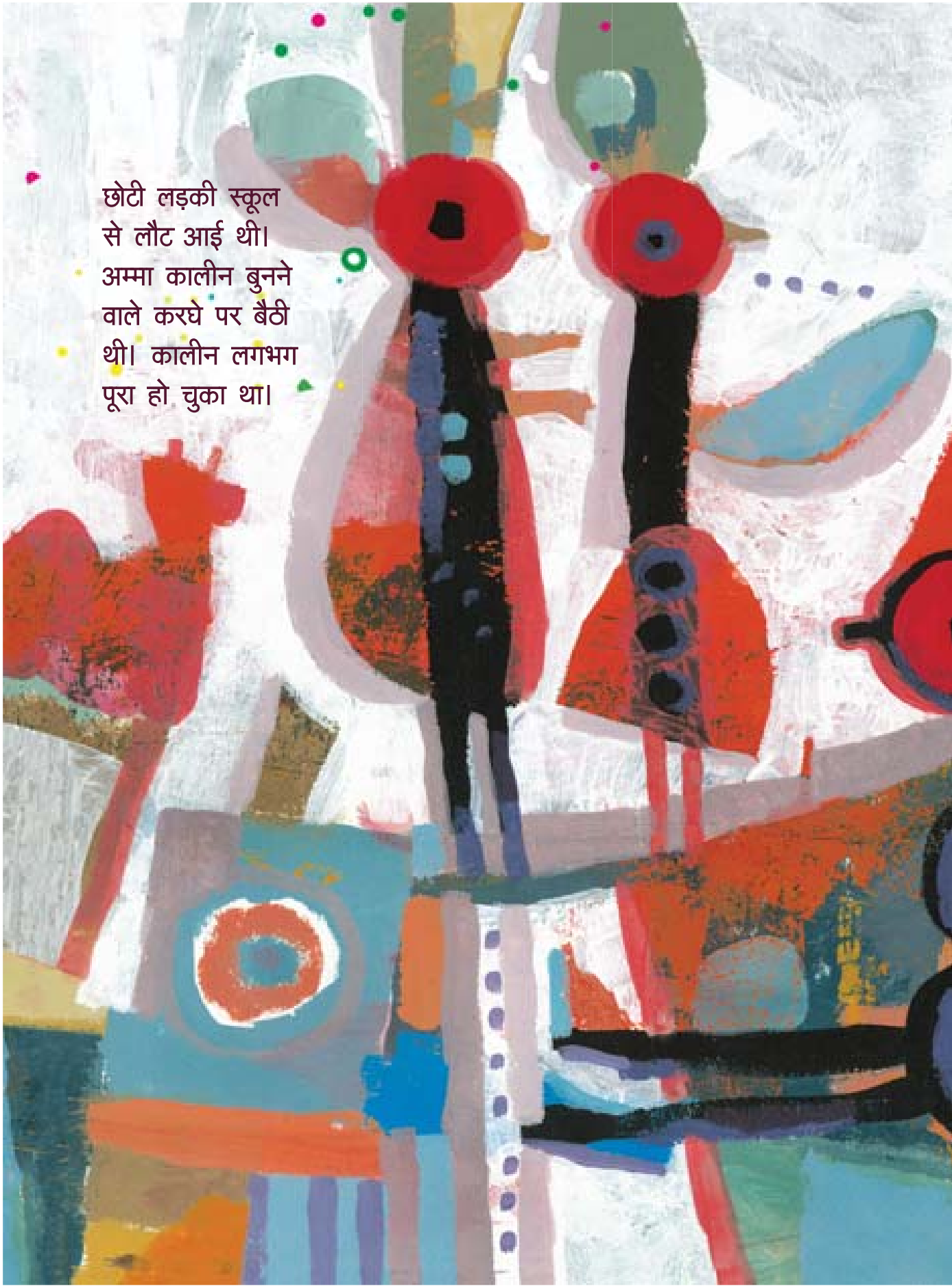

छोटी लड़की स्कूल से लौट आई थी। अम्मा कालीन बुनने वाले करघे पर बैठी थी। कालीन लगभग पूरा हो चुका था।

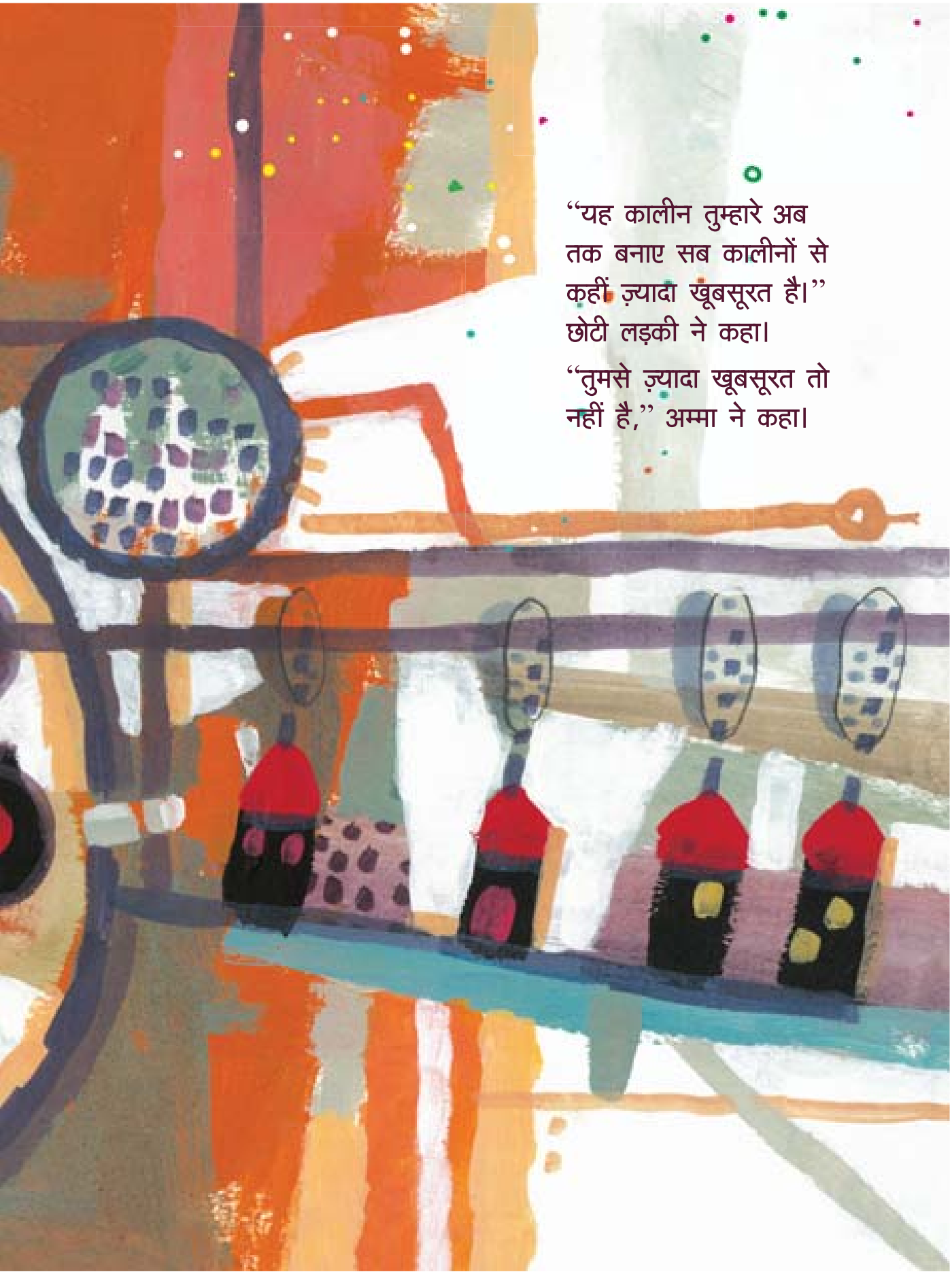

“यह कालीन तुम्हारे अब तक बनाए सब कालीनों से कहीं ज़्यादा खूबसूरत है।” छोटी लड़की ने कहा।

“तुमसे ज़्यादा खूबसूरत तो नहीं है,” अम्मा ने कहा।

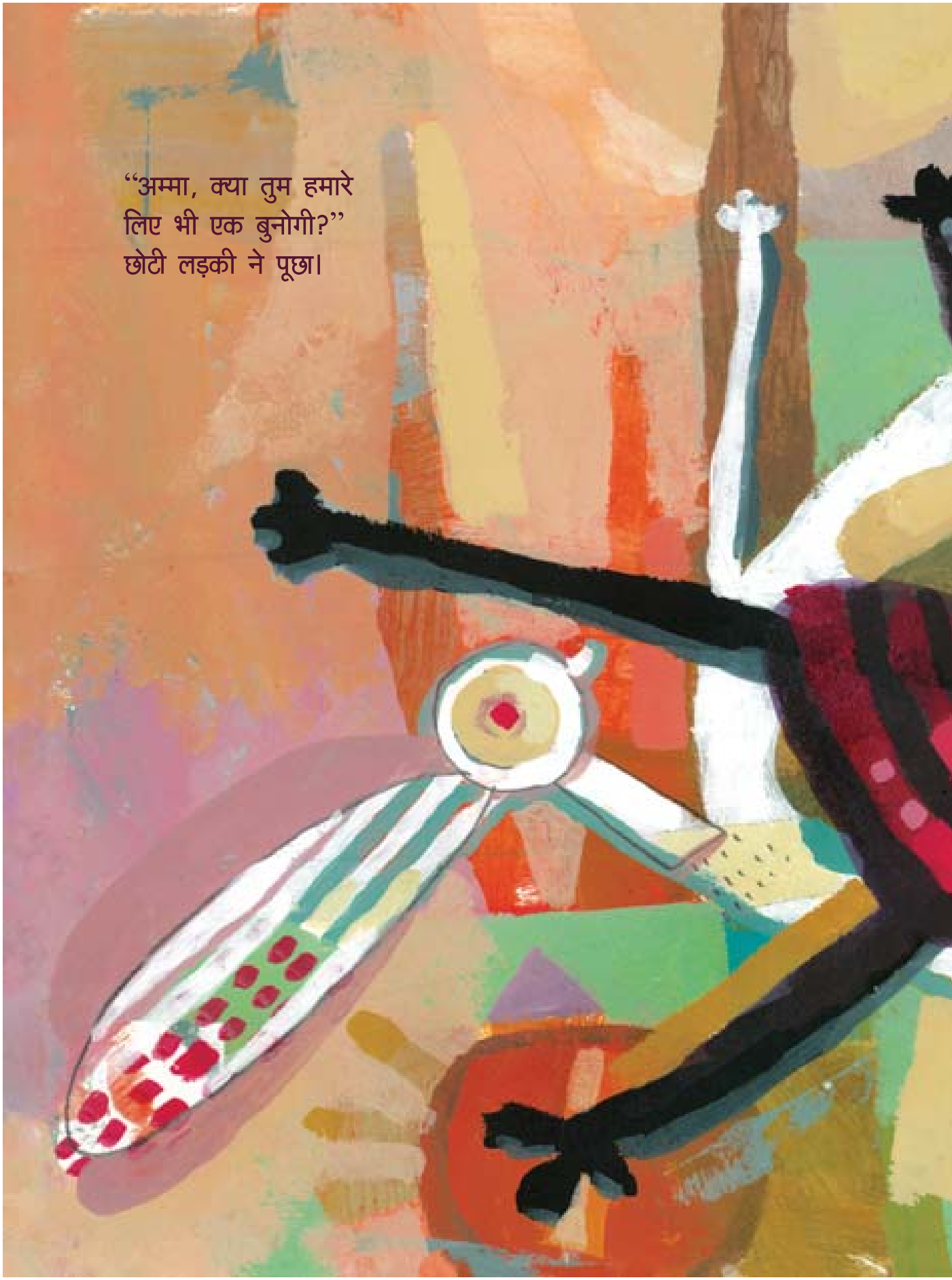

“अम्मा, क्या तुम हमारे
लिए भी एक बुनोगी?”
छोटी लड़की ने पूछा।

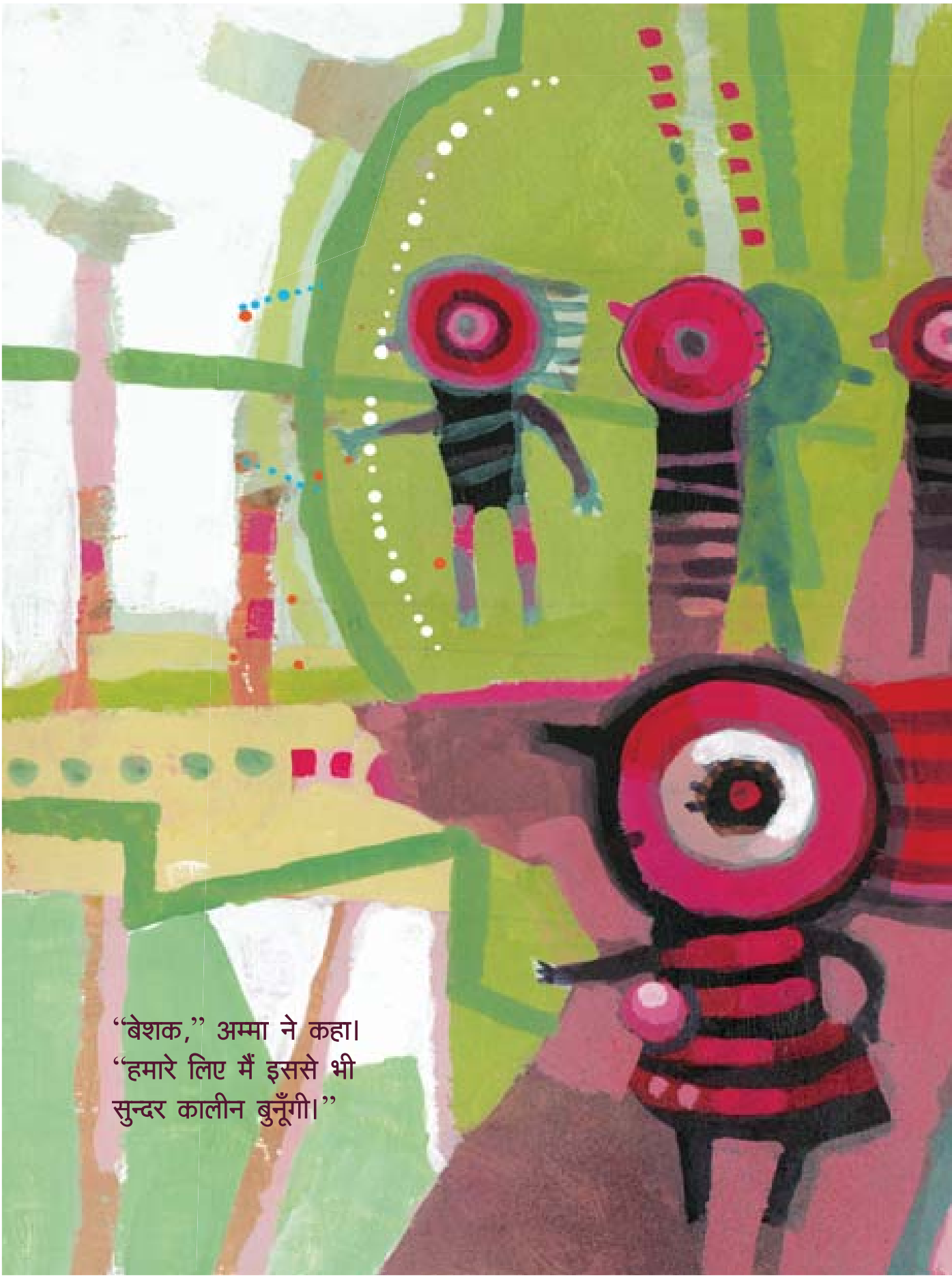

“बेशक,” अम्मा ने कहा।
“हमारे लिए मैं इससे भी
सुन्दर कालीन बुनूँगी।”

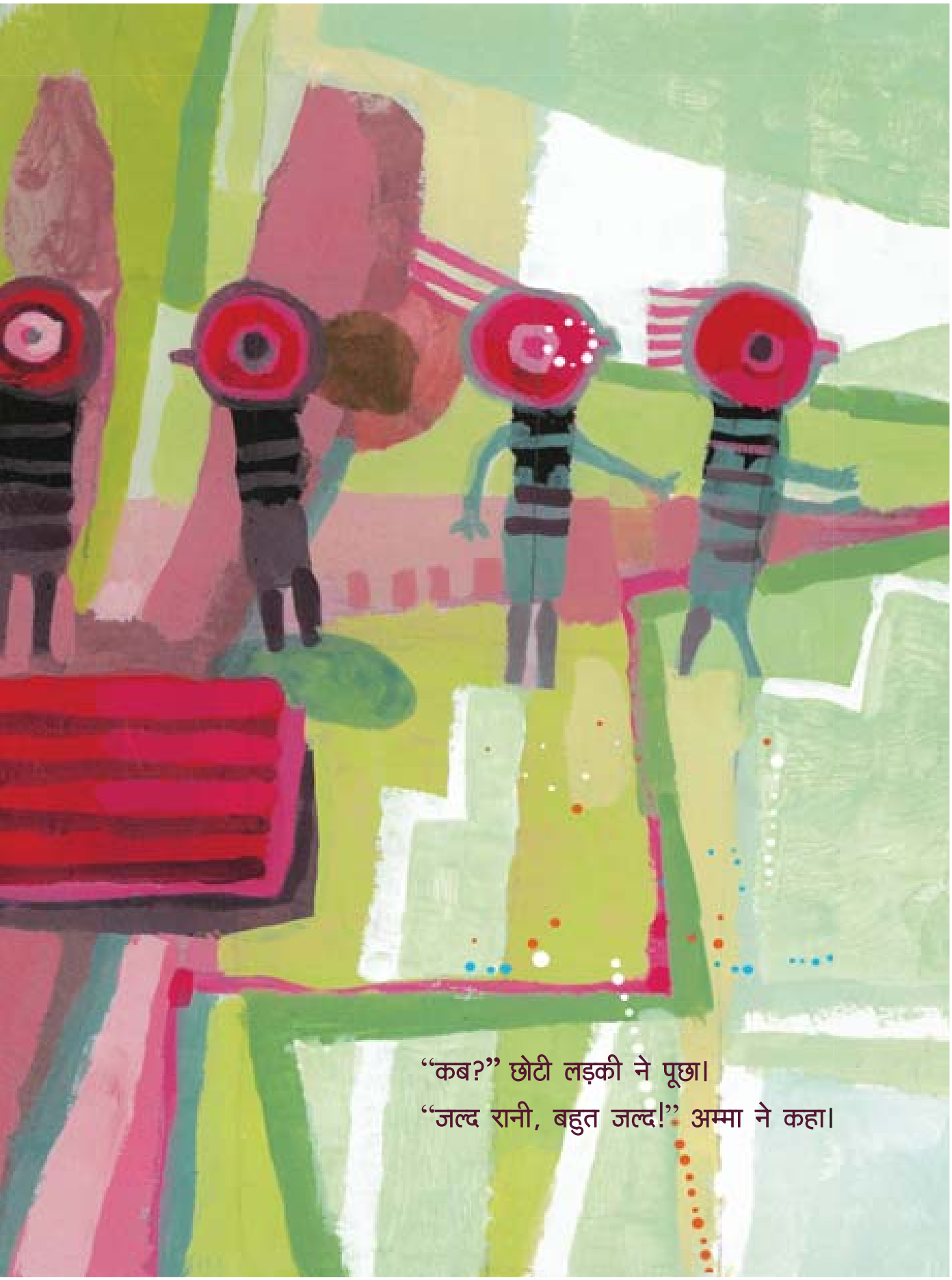

“कब?” छोटी लड़की ने पूछा।

“जल्द रानी, बहुत जल्द!” अम्मा ने कहा।

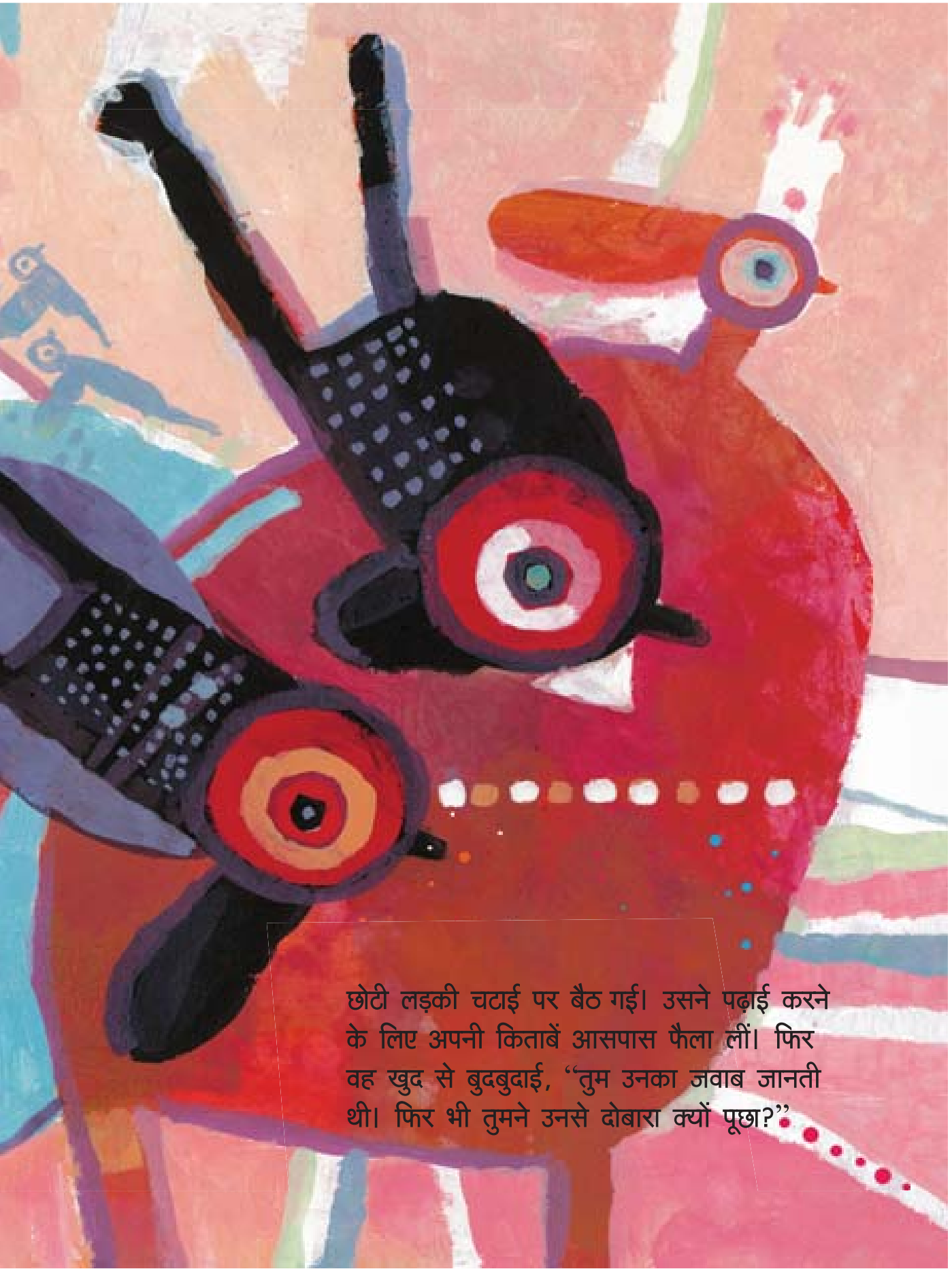

छोटी लड़की चटाई पर बैठ गई। उसने पढ़ाई करने के लिए अपनी किताबें आसपास फैला लीं। फिर वह खुद से बुदबुदाई, "तुम उनका जवाब जानती थी। फिर भी तुमने उनसे दोबारा क्यों पूछा?"

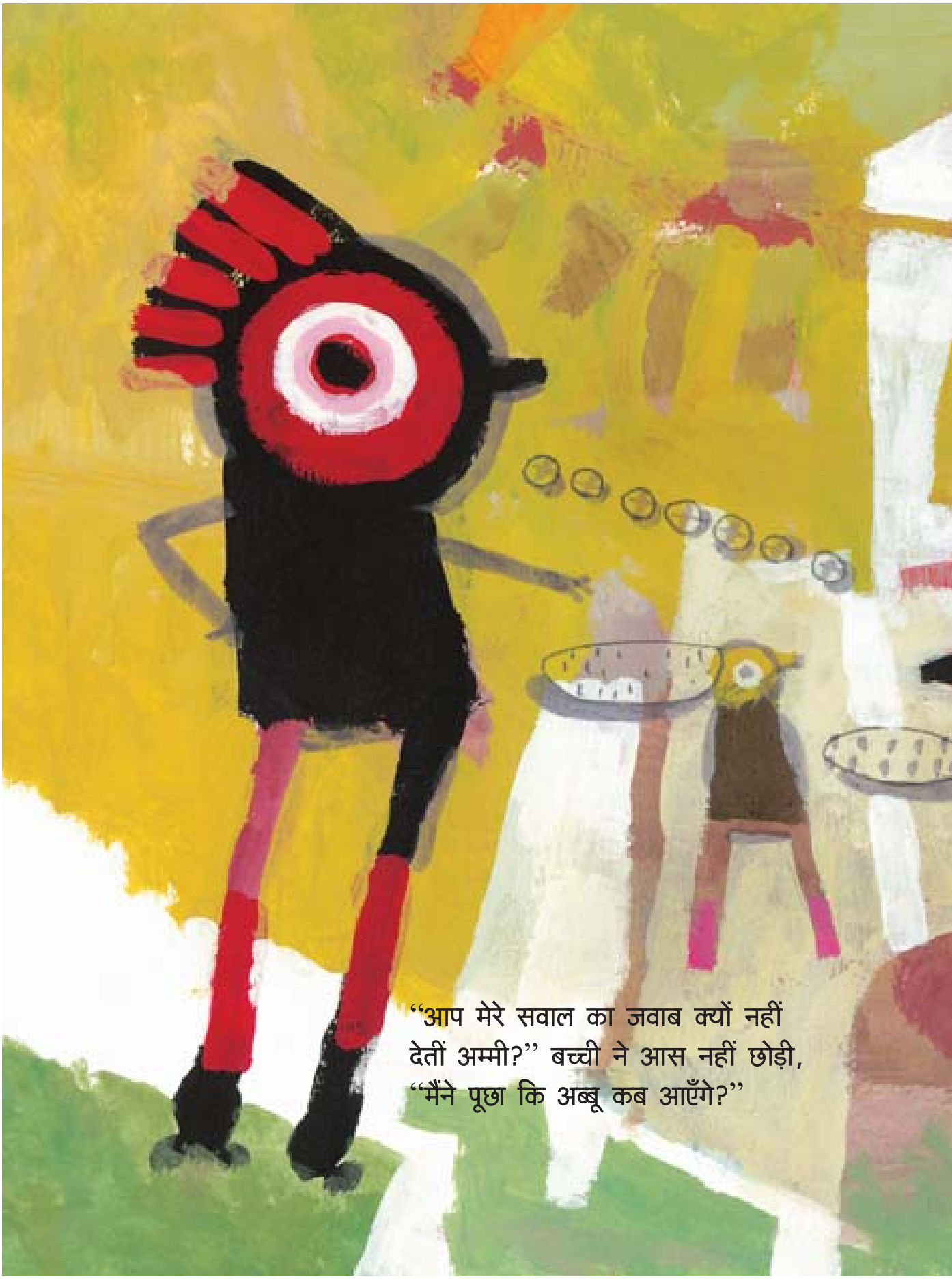

“आप मेरे सवाल का जवाब क्यों नहीं
देतीं अम्मी?” बच्ची ने आस नहीं छोड़ी,
“मैंने पूछा कि अब्बू कब आएँगे?”

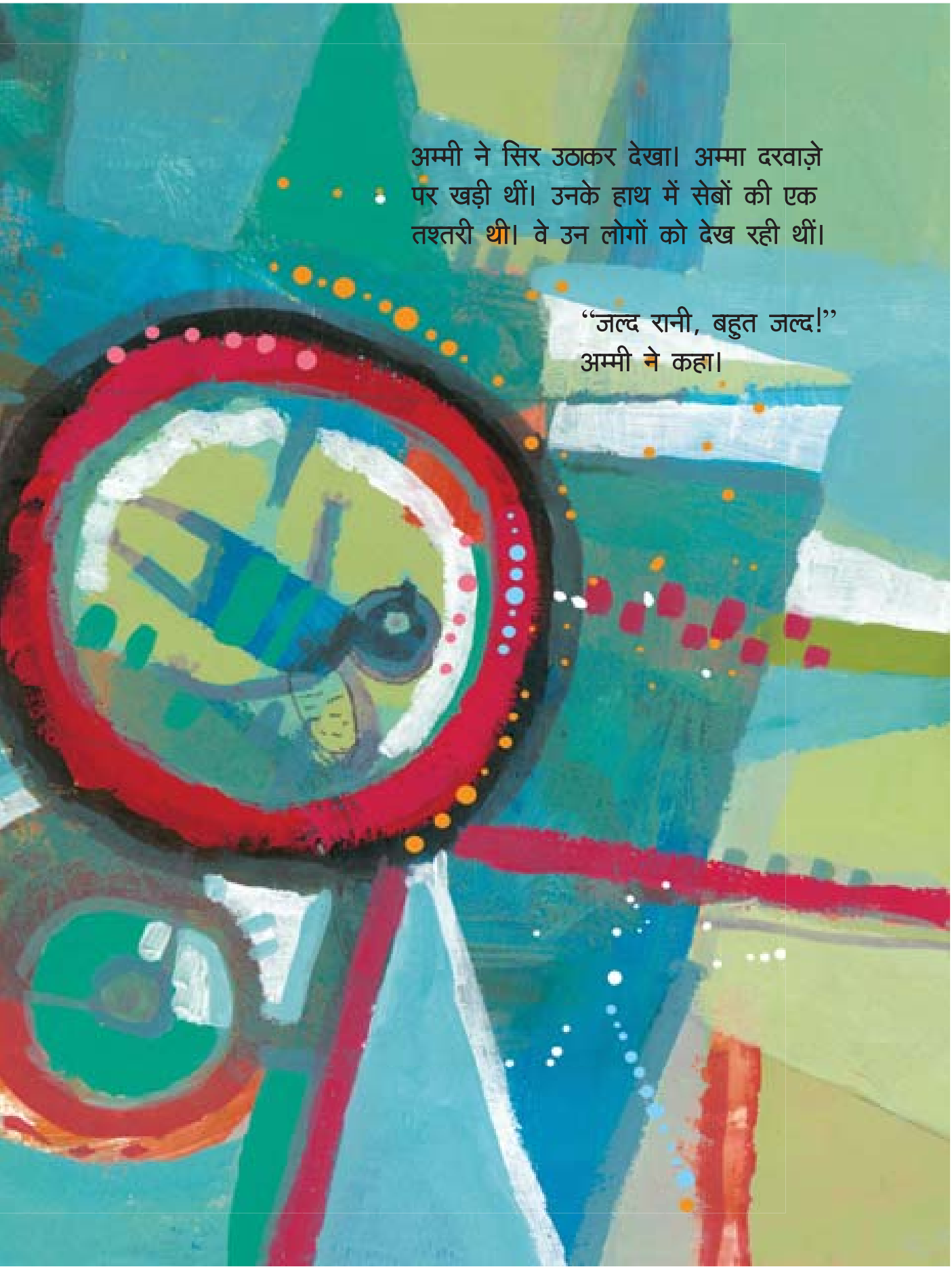

अम्मी ने सिर उठाकर देखा। अम्मा दरवाज़े पर खड़ी थीं। उनके हाथ में सेबों की एक तश्तरी थी। वे उन लोगों को देख रही थीं।

"जल्द रानी, बहुत जल्द!" अम्मी ने कहा।

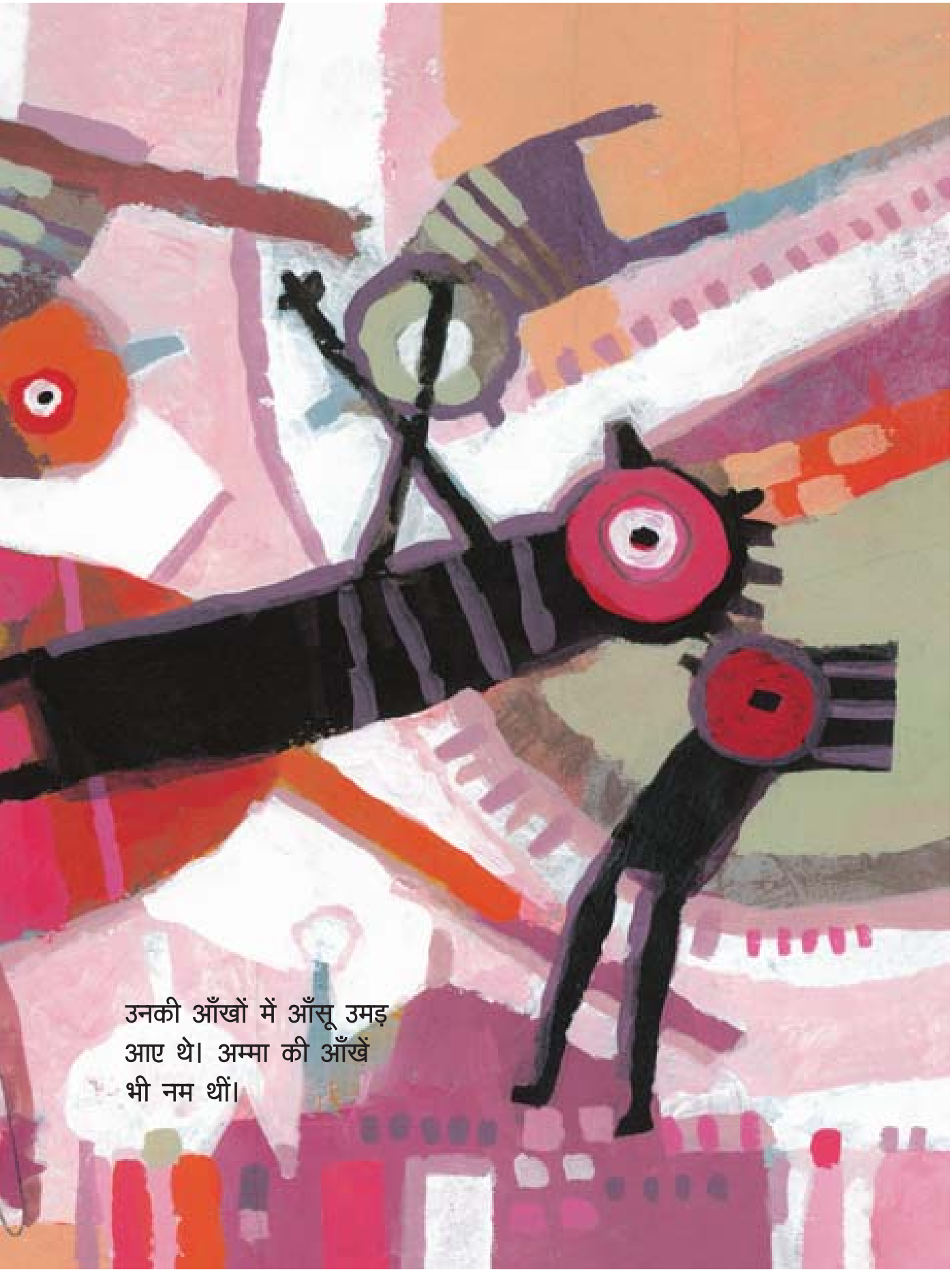

उनकी आँखों में आँसू उमड़
आए थे। अम्मा की आँखें
भी नम थीं।

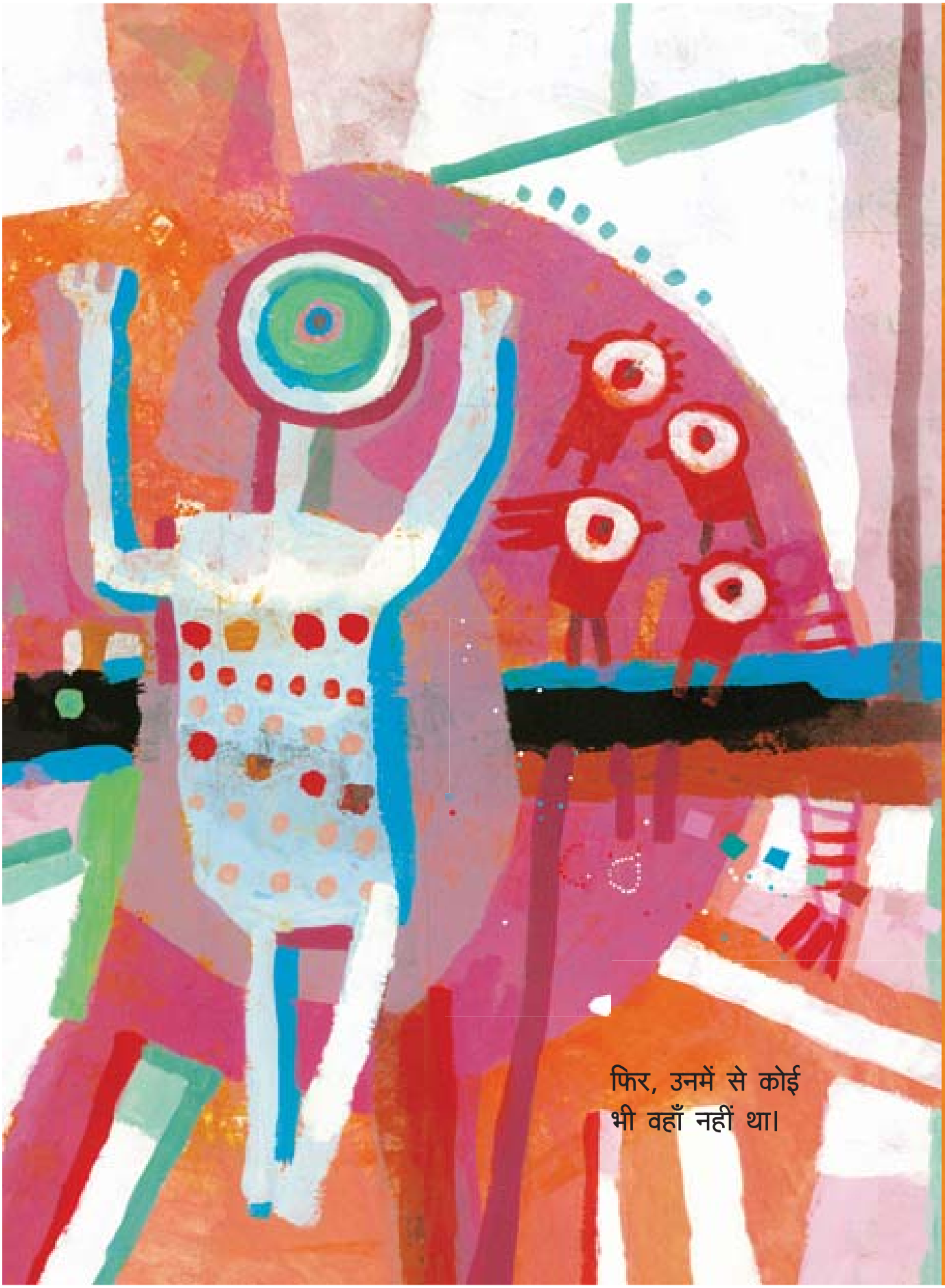
फिर, उनमें से कोई
भी वहाँ नहीं था।

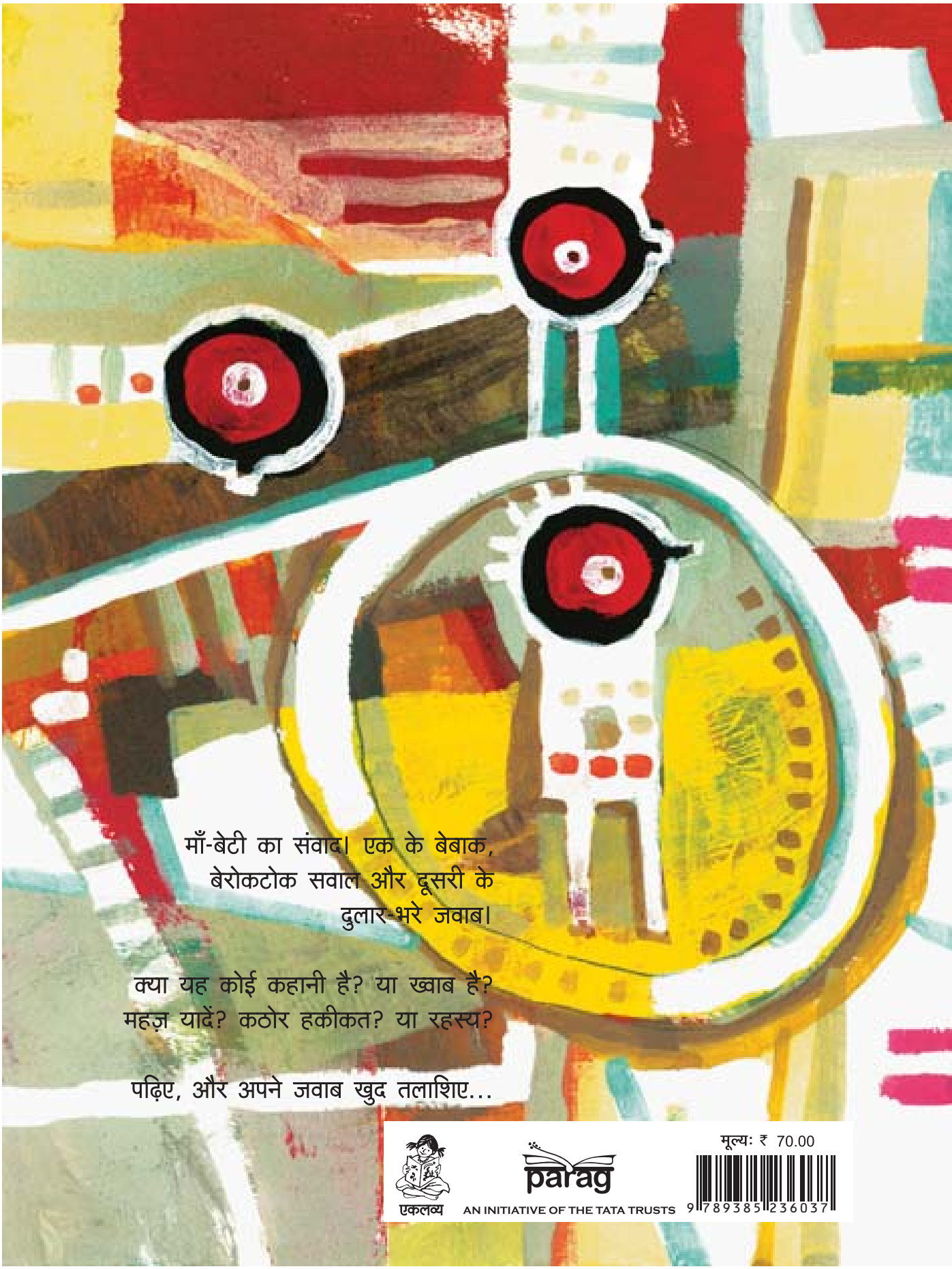

माँ-बेटी का संवाद। एक के बेबाक,
बेरोकटोक सवाल और दूसरी के
दुलार-भरे जवाब।

क्या यह कोई कहानी है? या ख्वाब है?
महज़ यादें? कठोर हकीकत? या रहस्य?

पढ़िए, और अपने जवाब खुद तलाशिए...

एकलव्य
parag
AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS
मूल्यः ₹ 70.00
9 789385 236037